

ISSN No : 2319-7137
UGC Serial No : 4389
Journal No. : 48910

Vol-6, Issue-2
July-Dec 2017

INTERNATIONAL Literary Quest



Prof. Ashok Singh
(Editor in Chief)

Dr. Vikash Kumar
(Editor)

नारी के कष्टों में भी नर से भारी नारी की जीवंत गाथा-सारा आकाश	-विजय प्रसाद	142
नाटककार सुरेंद्र वर्मा के नाटक और कथासाहित्य में		
स्त्री-पुरुष के अस्तित्व की समस्या	-डॉ. अर्चना दुबे	148
कमलेश्वर की कहानियों में मध्यवर्ग	-गणेश प्रसाद	155
शिक्षा शब्द का अर्थ एवं प्रयोजन	-दिव्या शुक्ला	159
सिनेमा और समाज	-डॉ. प्रियंका घिल्डियाल	162
नोटबंदी भ्रष्टाचार, कालाधन पर लगाम के लिए क्रांतिकारी कदम	-डॉ. रंकी सिंह	166
हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड में जनसंख्या असन्तुलन के		
कारण, दुष्परिणाम एवं प्रभाव	-डॉ. नीमा भेतवाल, डॉ. बी.पी. देवली	170
शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में आंचलिकबोध	-डॉ. सुरेन्द्र पाण्डेय	179
हिन्दी नाट्य विधा : उद्भव और विकास	-डॉ. पूनम राय	186
रमणिका गुप्ता और उनकी रचनाएँ : एक परिचय	-सरिता यादव	191
मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में ऐतिहासिक शिल्प-विधान	-श्वेता सिंह	194
दीन-दुःखियों के मसीहा : स्वामी विवेकानन्द	-डॉ. हिमांशु कुमार	199
सातवें दशक के बाद के हिन्दी कथा-साहित्य में राजनीति :		
मूल्यच्युति का यथार्थ	-कु. तानाबाई पाटिल	203
'दिन हमारे नहीं' कहानी में मॉरिशस की सामाजिक, राजनीतिक		
एवं आर्थिक स्थिति	-आराधना शुक्ला	209
भारतीय लिपियों का ऐतिहासिक विकास	-बंदना गर्ग	215
महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका	-रवीन्द्र कुमार दुबे	223
उच्च शिक्षा बनाम अनुसूचित जातियाँ : समस्या एवं समाधान	-काव्या मौर्या	227
पौराणिक साहित्य में धारणा एवं ध्यान योगाङ्ग	-श्री नवीन शर्मा	220

दीन-दुःखियों के मसीहा : स्वामी विवेकानन्द

—डॉ. हिमांशु कुमार

आधुनिक भारत के महान राष्ट्रवादी आध्यात्मिक संत स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 को मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर भगवान भुवन भास्कर की जीवन दायिनी तेजस्वी किरणों के उदय के साथ प्रातः 06:49 बजे कोलकाता के षिमला पाली के एक समृद्ध परिवार में हुआ था और वह आजीवन सूर्य की दीप्तिमान रश्मियों की तरह अपने दिव्य व्यक्तित्व से सम्पूर्ण मानवता को आलोकित करते रहे। स्वामी विवेकानन्द के पूर्वाश्रम का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त उच्च न्यायालय के प्रख्यात अधिवक्ता तथा अंग्रेजी और फारसी के विद्वान् थे। इनकी माता श्रीमती भुवनेश्वरी देवी पवित्र धार्मिक गृहणी थीं। इनके पितामह श्री दुर्गाचरण दत्त फारसी, संस्कृत, तथा कानून के विद्वान् थे। वह जीवन के पूर्वाह्न में ही पुत्र विश्वनाथ के जन्म के पश्चात् 25 वर्ष की आयु में संसार से विरक्त होकर सन्यास ग्रहण कर लिये थे। जनश्रुति के अनुसार उनकी माता की पुत्र कामना की आकांक्षा से काशी में की गयी भगवान् विश्वनाथ की विशेष पूजा अर्चना से प्रसन्न होकर विश्वेश्वर स्वयं दत्त परिवार में नरेन्द्र के रूप में अवतरित हुए।

स्वामी जी, यथार्थतः दैवी महापुरुष थे। आजानुबाहु, विशाल, दर्शनीय स्वस्थ शरीर, अप्रतिम प्रतिभा, कुशल वक्तृत्व क्षमता, अत्यन्त सूक्ष्म आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि, व्यापक मानवीय संवेदना दैवी ऊर्जा से सम्पन्न चुबकीय व्यक्तित्व उन्हें प्रकृति से ही प्राप्त था। विद्या, धर्म एवं अध्यात्म की पारिवारिक विरासत, ईश्वरीय गुणों की साक्षत् मूर्ति गुरु श्री राम कृष्ण परमहंस का पवित्र आध्यात्मिक सान्निध्य, पाश्चात्य दर्शन एवं हिन्दू धर्मशास्त्रों का गहन अध्ययन, स्वयं की आध्यात्मिक अनुभूति, भारत के गौरवमय अतीत का प्रभूतज्ञान तथा परिव्राजक रूप में भारत एवं अनेक पाश्चात्य भ्रमण की अनुभूतियों से नरेन्द्रनाथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर परम ओजस्वी युवा संन्यासी के रूप में उद्भूत हुए। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में पूर्णतः अज्ञात गेरुवा वस्त्रधारी, अकिंचन युवा संन्यासी (स्वामी विवेकानन्द) संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के शिकागो विश्वधर्म संसद में 11 सितम्बर 1893 को अपने प्रथम व्याख्यान के बाद अपनी अलौकिक आध्यात्मिक प्रतिभा तथा वैश्विक मानवीय दृष्टि के फलस्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय जगत में महानतम आध्यात्मिक महापुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

स्वामी जी अपने युग के महान् मानवतावादी संत थे। वह वृहद्, मानवीय संवेदना से ओत-प्रोत, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.), मोबाइल : 07697425313